RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 280
दि. 11.02.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

न्याय की धीमी रफ्तार: जजों की कमी से जूझता भारत, लंबित मामलों का पहाड़ बढ़ता जा रहा

देश की न्याय व्यवस्था इस समय गंभीर दबाव में है। अदालतों में लंबित मामलों की संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी है, जबकि जनसंख्या के अनुपात में न्यायाधीशों की उपलब्धता बेहद कम है। वर्तमान में प्रति 10 लाख आबादी पर औसतन केवल 22 जज कार्यरत हैं, जो विधि आयोग द्वारा वर्षों पहले सुझाए गए 50 जजों के मानक से काफी कम है। तेजी से बढ़ती आबादी और बढ़ते मुकदमों के बीच न्यायिक ढांचे का विस्तार अपेक्षित गति से नहीं हो पाया है। जिला अदालतों से लेकर उच्च न्यायालयों और सुप्रीम कोर्ट तक मामलों का भारी बोझ बना हुआ है। हजारों स्वीकृत पद खाली पड़े हैं, जिससे न्याय प्रक्रिया और धीमी हो रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते न्यायाधीशों की नियुक्ति, आधारभूत ढांचे का विकास और तकनीकी सुधारों पर गंभीरता से काम नहीं किया गया, तो न्याय मिलने में देरी और बढ़ सकती है। न्याय में देरी न केवल आम नागरिकों के अधिकारों को प्रभावित करती है, बल्कि लोकतंत्र और कानून व्यवस्था पर विश्वास को भी कमजोर करती है।

जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की न्याय व्यवस्था इस समय गंभीर दबाव के दौर से गुजर रही है। अदालतों में लंबित मामलों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है, जबकि न्यायाधीशों की संख्या जनसंख्या के अनुपात में बेहद कम है। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत में प्रति 10 लाख आबादी पर औसतन केवल 22 न्यायाधीश उपलब्ध हैं, जबकि विधि आयोग ने लगभग चार दशक पहले ही इस संख्या को 50 तक बढ़ाने की सिफारिश की थी। वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि न्यायिक संसाधनों और जनसंख्या के बीच गहरी असमानता बनी हुई है, जिसका सीधा प्रभाव आम नागरिकों को समय पर न्याय न मिल पाने के रूप में झेलना पड़ रहा है। देशभर की अदालतों में लंबित मुकदमों की स्थिति चिंताजनक है। जिला अदालतों में 4 करोड़ 81 लाख 60 हजार 880 से अधिक मामले लंबित हैं। उच्च न्यायालयों में 63 लाख 62 हजार 174 मामलों का निस्तारण बाकी है, जबकि सर्वोच्च न्यायालय में 92 हजार 320 मामले विचाराधीन हैं। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि न्यायालयों पर कार्यभार अत्यधिक बढ़ चुका है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि न्यायाधीशों की संख्या पर्याप्त होती तो मामलों के निस्तारण की गति कहीं अधिक तेज हो सकती थी। वर्तमान में जो औसत 22 न्यायाधीश प्रति 10 लाख जनसंख्या का बताया जा रहा है, वह 2011 की जनगणना के आधार पर है, जब देश की आबादी लगभग 121 करोड़ थी। आज भारत की जनसंख्या 140 करोड़ से अधिक मानी जा रही है। ऐसे में वास्तविक अनुपात और भी कम हो जाने की आशंका है। विधि आयोग ने वर्ष 1987 में अपनी 120वीं रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा था कि त्वरित और प्रभावी न्याय के लिए प्रति 10 लाख जनसंख्या पर कम से कम 50 न्यायाधीश होने चाहिए। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2002 में सुप्रीम कोर्ट ने 'ऑल इंडिया जज एसोसिएशन' मामले में केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वर्ष 2007 तक इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाए। लेकिन दो दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी यह लक्ष्य आधा भी पूरा नहीं हो पाया है। यह स्थिति बताती है कि न्यायिक ढांचे के विस्तार और सुधार को लेकर गंभीरता अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच सकी है।

राज्यों की स्थिति पर नजर डालें तो तस्वीर और भी चिंताजनक दिखाई देती है। पश्चिम बंगाल में प्रति 10 लाख आबादी पर मात्र 12 न्यायाधीश हैं, जो राष्ट्रीय औसत से भी काफी कम है। उत्तर प्रदेश में यह आंकड़ा 18.52, बिहार में 19.45 और झारखंड में 21.43 है। इन बड़े और जनसंख्या बहुल राज्यों में मामलों की संख्या भी अत्यधिक है, जिससे अदालतों पर अतिरिक्त दबाव बना रहता है। इसके विपरीत, मिजोरम में प्रति 10 लाख आबादी पर 67.44 न्यायाधीश उपलब्ध हैं और दिल्ली में यह आंकड़ा 53.43 है, जो राष्ट्रीय औसत से काफी बेहतर स्थिति को दर्शाता है। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि राज्यों के बीच न्यायिक संसाधनों का वितरण भी संतुलित नहीं है।

अंतरिक्ष में जीवन का नया अध्याय: तियांगोंग स्टेशन पर 400 किमी ऊपर जन्मी तितली

जीएनएस)। शंघाई। अंतरिक्ष अनुसंधान के इतिहास में एक नई और बेहद प्रेरक उपलब्धि जुड़ गई है। चीन के तियांगोंग स्पेस स्टेशन पर वैज्ञानिकों ने ऐसा प्रयोग सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिसने यह साबित कर दिया कि जीवन केवल धरती तक सीमित नहीं है। धरती से लगभग 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर, सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण (माइक्रोग्रैविटी) की स्थिति में एक तितली ने ककून से निकलकर पूर्ण विकसित रूप धारण किया। यह पहली बार है जब किसी कीट ने अंतरिक्ष में बिना किसी प्रत्यक्ष मानवीय हस्तक्षेप के अपना पूरा जीवन चक्र पूरा किया है।

यह प्रयोग एक विशेष रूप से डिजाइन किए गए सीलबंद जैविक कैप्सूल के भीतर किया गया था। इस कैप्सूल को इस तरह तैयार किया गया था कि उसमें एक छोटा लेकिन संतुलित इकोसिस्टम विकसित हो सके। इसमें पौधों, सूक्ष्मजीवों और पोषक तत्वों का ऐसा संयोजन बनाया गया, जिससे ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड और नमी का संतुलन पृथ्वी जैसे वातावरण के समान बना रहे। पौधे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से ऑक्सीजन उत्पन्न करते रहे, जबकि सूक्ष्मजीव जैविक अपशिष्ट को विघटित कर संतुलन बनाए रखने में सहायक बने। इस पूरी प्रक्रिया में वैज्ञानिकों ने बाहर से कोई हस्तक्षेप नहीं किया, ताकि यह देखा जा सके कि क्या बंद प्रणाली में जीवन स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकता है। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण लगभग नगण्य होता है। ऐसे में जीवों की शारीरिक संरचना, कोशिकीय विकास और अंगों की कार्यप्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि क्या तितली अपने कायांतरण (मेटामॉर्फोसिस) की जटिल प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा कर पाएगी। ककून से बाहर निकलने के बाद तितली को अपने पंखों में द्रव प्रवाहित कर उन्हें फैलाना होता है, जो सामान्यतः गुरुत्वाकर्षण की सहायता से संतुलित होता है। माइक्रोग्रैविटी में यह प्रक्रिया बाधित हो सकती थी। लेकिन प्रयोग के दौरान तितली ने सफलतापूर्वक अपने पंख फैलाए और सामान्य संरचना विकसित की, जिससे वैज्ञानिकों को आश्चर्य और उत्साह दोनों मिला। यह शोध चीन की चोंगकिंग यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया था और इसे दिसंबर माह में अंतरिक्ष स्टेशन भेजा गया था। इस परियोजना का उद्देश्य केवल एक तितली का जन्म कराना नहीं था, बल्कि यह समझना था कि क्या अंतरिक्ष में एक आत्मनिर्भर जैविक तंत्र विकसित किया जा सकता है। यदि छोटे जीव और पौधे नियंत्रित वातावरण में जीवित रह सकते हैं और अपना जीवन चक्र पूरा कर सकते हैं, तो भविष्य में मानव बस्तियों के लिए भी इसी प्रकार के बंद इकोसिस्टम तैयार किए जा सकते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह उपलब्धि मंगल और चंद्रमा जैसे ग्रहों पर प्रस्तावित दीर्घकालिक मानव मिशनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतरिक्ष यात्रियों को लंबे समय तक जीवित रखने के लिए भोजन, ऑक्सीजन और जल के पुनर्चक्रण की व्यवस्था आवश्यक होगी। यदि अंतरिक्ष में जैविक जीवन चक्र को सफलतापूर्वक संचालित किया जा सकता है, तो यह भविष्य की अंतरिक्ष कॉलोनियों की नींव रख सकता है। इसके अलावा, इस प्रयोग से वैज्ञानिकों को यह भी समझने में मदद मिलेगी कि सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में जीवों के विकास और व्यवहार में किस प्रकार के बदलाव आते हैं।

तियांगोंग स्पेस स्टेशन पर हुआ यह प्रयोग न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मानव जिज्ञासा और नवाचार की क्षमता का प्रतीक भी है। अंतरिक्ष में जन्मी यह तितली केवल एक कीट नहीं, बल्कि उस संभावना का प्रतीक है कि आने वाले समय में मनुष्य पृथ्वी से परे भी जीवन के नए अध्याय लिख सकता है।

चुनाव से पहले बांग्लादेश में हिंसा की आंच एक और हिंदू कारोबारी की हत्या से बढ़ी चिंता

जीएनएस)। ढाका। बांग्लादेश में आम चुनाव से ठीक तीन दिन पहले हिंसा की एक और दर्दनाक घटना ने अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सोमवार को मयमनसिंह जिले के त्रिशाल उपजिला में 62 वर्षीय हिंदू कारोबारी सुशेन चंद्र सरकार की बेरहमी से हत्या कर दी गई। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार अज्ञात हमलावरों ने उनकी दुकान में घुसकर धारदार हथियार से हमला किया और उन्हें लहूलुहान हालत में वहीं छोड़कर शटर बंद कर फरार हो गए। दक्षिणकांडा गांव के निवासी सुशेन चंद्र सरकार चावल के व्यापारी थे और बोगार बाजार चौराहे पर वर्षों से अपनी दुकान चला रहे थे। त्रिशाल पुलिस थाने के प्रभारी मुहम्मद फिरोज हुसैन ने बताया कि हमलावरों ने योजनाबद्ध तरीके से वारदात को अंजाम दिया। जब देर रात तक वह घर नहीं लौटे तो परिजनों को चिंता हुई और उन्होंने तलाश शुरू की। दुकान का शटर खोलने पर वे उन्हें खून से सने फर्श पर पड़े मिले। तत्काल उन्हें मयमनसिंह मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, लेकिन अब तक किसी की गिरफ्तारी की खबर नहीं है। यह घटना ऐसे समय में हुई है जब देश में चुनावी माहौल गरम है और राजनीतिक तनाव चरम पर है। मयमनसिंह जिले में हाल के दिनों में हिंदू समुदाय को निशाना बनाए जाने की यह दूसरी बड़ी घटना है। इससे पहले 18 दिसंबर, 2025 को 25 वर्षीय दीपू चंद्र दास की भीड़ ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी और शव को आग के हवाले कर दिया था। बीते डेढ़ महीने में ऐसी कई घटनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय में भय और असुरक्षा की भावना को गहरा कर दिया है।

17 जनवरी, 2026 को कारोबारी लिटन घोष उर्फ काली की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। 16 जनवरी को 30 वर्षीय रिपन साहा की कार से कुचलकर जान ले ली गई। 11 जनवरी को फेंगुआ के दानगभुआ में समीर दास नामक ऑटो चालक की कट्टरपंथियों द्वारा हत्या कर दी गई। 6 जनवरी को नाओगांव जिले में चोरी के आरोप से बचने के लिए नहर में कूदे 25 वर्षीय मिथुन सरकार की मौत हो गई। 5 जनवरी को नरसिंदी जिले के किराना दुकानदार मणि चक्रवर्ती पर हमला कर उनकी हत्या कर दी गई, जबकि उसी दिन खुलना मंडल के अरुआ गांव में 38 वर्षीय राणा प्रताप बैरागी को गोली मार दी गई। 3 जनवरी को 50 वर्षीय खोकन चंद्र दास पर चाकू से हमला करने के बाद उन्हें जिंदा जला दिया गया। 29 दिसंबर, 2025 को ब्रजेंदर बिस्वास की गोली मारकर हत्या की गई और 24 दिसंबर को राजबारी में अमृत मंडल की भीड़ ने पीट-पीटकर जान ले ली थी।

लगातार हो रही इन घटनाओं ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का भी ध्यान खींचा है। मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि चुनावी माहौल में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। स्थानीय हिंदू संगठनों ने दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई की मांग की है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चुनाव के पहले बढ़ती हिंसा से सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक प्रक्रिया दोनों प्रभावित हो सकते हैं। फिलहाल, पुलिस जांच जारी है, लेकिन अल्पसंख्यक समुदाय के बीच भय का वातावरण बना हुआ है और लोग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं।

एच-1बी वीजा पर सियासी घमासान: अमेरिकी संसद में खत्म करने का विधेयक पेश

जीएनएस)। एच-1बी वीजा पर निर्णायक वार की तैयारीः अमेरिकी संसद में कार्यक्रम समाप्त करने का विधेयक पेश, वैश्विक प्रतिभा और रोजगार नीति पर गहराया विवाद वाशिंगटन। अमेरिका की बहुचर्चित एच-1बी वीजा योजना एक बार फिर सियासी बहस के केंद्र में आ गई है। रिपब्लिकन प्रतिनिधि ग्रेग स्ट्यूबी ने सोमवार को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में एक नया विधेयक पेश किया, जिसका उद्देश्य इस कार्यक्रम को पूरी तरह समाप्त करना है। 'एंडिंग एक्सप्लॉइटेटिव इम्पोर्टेड लेबर एग्जेम्शंस एक्ट' (EXILE Act) नामक इस प्रस्ताव के तहत आव्रजन और राष्ट्रीयता अधिनियम में संशोधन कर एच-1बी वीजा व्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से खत्म करने का प्रावधान किया गया है। स्ट्यूबी का कहना है कि यह योजना अमेरिकी श्रमिकों के हितों को नुकसान पहुंचा रही है और विदेशी कामगारों को अनुचित प्राथमिकता दे रही है।

ग्रेग स्ट्यूबी ने विधेयक पेश करते हुए कहा कि अमेरिकी नौकरियां और अवसर पहले अमेरिकी नागरिकों के लिए सुरक्षित होने चाहिए। उनका आरोप है कि एच-1बी कार्यक्रम के माध्यम से कंपनियां अपेक्षाकृत कम वेतन पर विदेशी पेशेवरों को नियुक्त कर घरेलू कर्मचारियों के अवसर सीमित कर देती हैं। उन्होंने इसे "अमेरिकी सपने" के विरुद्ध बताते हुए कहा कि जब तक गैर-नागरिकों को प्राथमिकता दी जाती रहेगी, तब तक देश के युवाओं और पेशेवरों का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। स्ट्यूबी के कार्यालय के अनुसार, यदि यह विधेयक पारित हो जाता है तो वर्ष 2027 से प्रत्येक वित्तीय वर्ष में एच-1बी वीजा की संख्या शून्य कर दी जाएगी, जिससे यह कार्यक्रम प्रभावी रूप से समाप्त हो जाएगा।

एच-1बी वीजा एक नॉन-इमिग्रेंट वर्क वीजा है, जिसे विशेष कौशल वाले विदेशी पेशेवरों के लिए बनाया गया है। अमेरिकी कंपनियां इस वीजा के माध्यम से तकनीक, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, वित्त, शिक्षा और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञों को नियुक्त करती हैं। हर वर्ष लगभग 85,000 नए एच-1बी वीजा जारी किए जाते हैं, जिनमें 65,000 सामान्य श्रेणी और 20,000 उच्च शिक्षा डिग्री धारकों के लिए आरक्षित होते हैं। बड़ी संख्या में भारतीय आईटी पेशेवर इस वीजा के तहत अमेरिका में कार्यरत हैं, और अमेरिकी टेक उद्योग में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

इस प्रस्ताव ने अमेरिकी राजनीतिक और व्यावसायिक जगत में नई बहस छेड़ दी है। एच-1बी के समर्थकों का तर्क है कि यह कार्यक्रम वैश्विक प्रतिभा को अमेरिका की ओर आकर्षित करता है और नवाचार, शोध तथा तकनीकी विकास को बढ़ावा देता है। सिलिकॉन वैली की कई प्रमुख कंपनियां मानती हैं कि उच्च कौशल वाले पेशेवरों की कमी को पूरा करने में यह वीजा अहम भूमिका निभाता है। उनका कहना है कि यदि यह कार्यक्रम समाप्त कर दिया गया, तो अमेरिकी कंपनियों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता प्रभावित हो सकती है और वे अपने संचालन को अन्य देशों में स्थानांतरित करने पर विचार कर सकती हैं।

वहीं आलोचकों का दावा है कि एच-1बी वीजा का दुरुपयोग कर कुछ कंपनियां लागत कम करने के लिए विदेशी कर्मचारियों को प्राथमिकता देती हैं। उनका कहना है कि इससे स्थानीय कर्मचारियों पर वेतन का दबाव बढ़ता है और रोजगार के अवसर सीमित होते हैं। अमेरिका में आर्थिक राष्ट्रवाद और "अमेरिका फर्स्ट" जैसी नीतियों के बढ़ते प्रभाव के बीच यह मुद्दा फिर से प्रमुख बन गया है। यदि यह विधेयक आगे बढ़ता है और कानून का रूप लेता है, तो इसका प्रभाव केवल अमेरिकी श्रम बाजार तक सीमित नहीं रहेगा।

तिरुपति लड्डू प्रसादम घोटाला: ईडी ने दर्ज किया मनी लॉन्ड्रिंग केस, अवैध धन और हवाला कनेक्शन की जांच तेज

जीएनएस)। नई दिल्ली। देश के सबसे प्रतिष्ठित और आस्था के प्रमुख केंद्रों में से एक तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) मंदिर से जुड़े 'लड्डू प्रसादम' मामले ने अब गंभीर कानूनी मोड़ ले लिया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने इस प्रकरण में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत मामला दर्ज कर मनी लॉन्ड्रिंग की औपचारिक जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों के अनुसार, एजेंसी इस बात की पड़ताल कर रही है कि प्रसादम के निर्माण और आपूर्ति से जुड़े कथित अनियमितताओं के माध्यम से अपराध की आय (Proceeds of Crime) उत्पन्न की गई या नहीं, और यदि हां, तो उस धन को किस तरह से छिपाया या स्थानांतरित किया गया। सूत्रों ने बताया कि ईडी ने यह कार्रवाई केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के नेतृत्व में गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) द्वारा दर्ज प्राथमिकी, एकत्र किए गए दस्तावेजों और हाल ही में दायर आरोपपत्र के आधार पर की है। एसआईटी की जांच में प्रसादम के लिए उपयोग किए जाने वाले घी की गुणवत्ता, आपूर्ति प्रक्रिया और ठेकों में कथित गड़बड़ियों के संकेत मिले थे। अब ईडी इन तथ्यों के वित्तीय पहलुओं को खंगाल रही है। एजेंसी यह जानने का प्रयास कर रही है कि क्या घी में मिलावट या निम्न गुणवत्ता की सामग्री की आपूर्ति के माध्यम से अवैध मुनाफा कमाया गया और उस धन को वैध दिखाने के लिए जटिल वित्तीय लेन-देन का सहारा लिया गया। अधिकारियों के अनुसार, जांच का फोकस बैंक खातों, कंपनियों के लेन-देन, संभावित शेल कंपनियों और संबंधित व्यक्तियों की संपत्तियों पर है। ईडी को संदेह है कि इस मामले में हवाला चैनलों के माध्यम से धन के हस्तांतरण और गबन की भी भूमिका हो सकती है। यदि ऐसा पाया जाता है, तो यह मामला केवल आपूर्ति में अनियमितता का नहीं, बल्कि संगठित आर्थिक अपराध का रूप ले सकता है। एजेंसी डिजिटल रिकॉर्ड, ईमेल संचार, ठेका दस्तावेज और वित्तीय विवरणों की फोरेंसिक जांच भी कर रही है। तिरुपति मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि आर्थिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थान है। यहां प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं और लड्डू प्रसादम को विशेष धार्मिक आस्था से जोड़ा जाता है। मंदिर प्रशासन द्वारा प्रतिदिन बड़ी मात्रा में लड्डू तैयार किए जाते हैं, जिसके लिए घी और अन्य सामग्री की भारी खरीद होती है। ऐसे में आपूर्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता और गुणवत्ता नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। कथित अनियमितताओं की खबर सामने आने के बाद श्रद्धालुओं में चिंता व्याप्त है, क्योंकि यह मामला सीधे धार्मिक विश्वास और प्रसाद की पवित्रता से जुड़ा है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यदि मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप सिद्ध होते हैं, तो संबंधित व्यक्तियों पर सख्त कार्रवाई संभव है, जिसमें संपत्तियों की कुर्की और गिरफ्तारी भी शामिल हो सकती है। पीएमएलए के तहत ईडी को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं, जिनके जरिए वह संदिग्ध संपत्तियों को अस्थायी रूप से अटैच कर सकती है और आरोपियों से पूछताछ कर सकती है। आने वाले समय में एजेंसी द्वारा तलाशी और पूछताछ की कार्रवाई तेज होने की संभावना है। इस प्रकरण ने मंदिर प्रशासन की कार्यप्रणाली, ठेका प्रणाली और गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र पर भी सवाल खड़े किए हैं। जांच एजेंसियां यह स्पष्ट करने में जुटी हैं कि क्या यह मामला केवल लापरवाही और भ्रष्टाचार तक सीमित है या इसके पीछे संगठित वित्तीय अनियमितताओं का बड़ा नेटवर्क सक्रिय था।

संपादकीय

सरसंघचालक के लेक्चर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक चमत्कारिक विषय है। मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से इसने चमत्कारिक रूप से गति पकड़ी है। हम एक एनजीओ यानी स्वयंसेवी संस्था हैं। राजनीति से हमारा कोई लेना-देना नहीं, ऐसा दावा करनेवाले संगठन का यह शताब्दी वर्ष है। संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित संवाद कार्यक्रम में मुंबई के सभी क्षेत्रों से हजारों लोग एकत्रित हुए और उन्हें सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने संबोधित किया। सरसंघचालक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा, इसकी स्थापना से लेकर आज तक राष्ट्र निर्माण में इसकी भागीदारी का खुलासा किया। उन्होंने कहा कि यह यात्रा ऐतिहासिक, प्रेरणादायक, संघर्षों से भरी आदि रही है। सरसंघचालक कहते हैं, 'संघ का कार्य देश के लिए है। संघ का कार्य किसी का विरोध किए बिना चलता है।' बेशक, यह सिर्फ बोलने भर के लिए है। डॉ. भागवत के इस 'लेक्चर' में कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिसमें प्रसिद्ध अभिनेता सलमान खान सहित कई सितारे भी अवतरित हुए। संघ को सौ वर्ष हो गए हैं, लेकिन मोदी युग से पहले संघ के किसी भी कार्यक्रम में इनके शामिल होने का कोई रिकॉर्ड नहीं है तो क्या ये सभी लोग किसी अज्ञात भय के कारण संघ शताब्दी समारोह में शामिल हुए? शायद 'अब और कोई झंझट नहीं चाहिए' का भाव ही इसमें प्रमुख रहा होगा। अभिनेता रणबीर कपूर भी हाजिर था। राज कपूर उनके दादा थे। कपूर इससे पहले कभी भाजपा या संघ के किसी मंच पर नहीं दिखे थे, क्योंकि राज कपूर स्वयं वामपंथी और कट्टर कम्युनिस्ट थे। उनकी फिल्मों में इन विचारों की झलक हमेशा दिखाई देती थी, लेकिन फिर भी छोटे कपूर संघ समारोह में हाजिर थे। इस शताब्दी समारोह में कई वैज्ञानिक, कानूनी पंडित, लेखक, उद्योगपति उपस्थित थे। डॉ. भागवत ने इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने 'लेक्चर' दिया यानी संबोधित किया। उसके कुछ मुद्दे वाकई हैं। यानी 'मोदी भले ही प्रधानमंत्री हैं, लेकिन उनकी पार्टी भाजपा है और भाजपा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूरी तरह अलग-अलग हैं। सरकार में कुछ स्वयंसेवक जरूर हैं, लेकिन इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि संघ सत्ता में है।' डॉ. भागवत किसे बेवकूफ बना रहे हैं? वे अपने सामने मौजूद लोगों को कुछ समय के लिए भ्रमित कर सकते हैं, लेकिन देश मूर्ख नहीं है। भाजपा और संघ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सत्ताधारी दल भाजपा द्वारा किए गए सभी पापों में संघ भी शामिल है। दिल्ली में झंडेवाला एस्टेट में संघ का एक पांच सितारा कार्यालय बनाया गया और पार्किंग की जगह कम होने के कारण १५० साल पुराने मंदिर पर बुलडोजर चला दिया गया। यह सब भाजपा के साथ सत्ता साझा करने के अहंकार के कारण हुआ। संघ अब भाजपा के भ्रष्टाचार, अपराध और असंवैधानिक कृत्यों में खुलेआम भागीदार है। इसलिए वे यह कहकर टालमटोल नहीं कर सकते कि हमारा भाजपा से कोई संबंध नहीं है। संघ अलग है, भाजपा अलग है, यह सरासर गप है। १९७० में देश में कांग्रेस की तानाशाही के खिलाफ जनता पार्टी की सरकार बनी थी। उसमें संघ के लोग भी थे, लेकिन 'संघ' के लोगों ने दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर उस सरकार को गिरा दिया। जब मधु लिमये जैसे लोगों ने संघ से अलग होने का सुझाव दिया तो वाजपेयी, आडवाणी और अन्य लोगों ने इसे अस्वीकार कर दिया और सरकार गिरा दी। फिर भी उस वक्त का संघ और उसके स्वयंसेवक आज की तुलना में कहीं अधिक शुद्ध, पवित्र और ईमानदार थे। उस समय संघ के प्रति सम्मान का भाव था। क्या आज संघ में वह चरित्र बचा है? यह इस बात का संकेत नहीं है कि संघ एक स्वयंसेवी संगठन है। हालांकि, मोदी और शाह की पार्टी भाजपा है, लेकिन उनकी 'पाठशाला', 'संघ' और 'महाविद्यालय' संघ ही है। मोदी की डिग्री की गड़बड़ की वजह भी वही है, क्योंकि सभी के चरित्र का ग्राफ पूरी तरह से बिगड़ गया है। 'हिंदू और मुसलमान अलग नहीं हैं, जो मुसलमान यहां के रीति-रिवाजों, परंपराओं और संस्कृति को अपना मानते हैं, वे अपने ही हैं। इसलिए उन सभी को अपना ही मनाना चाहिए डॉ. भागवत ऐसे शब्दों का भी उद्गार करते हैं, लेकिन केवल सलमान खान को आमंत्रित करने से यह संभव नहीं होगा। सलमान खान 'शो बिजनेस' हैं। क्या संघ के मंच पर सलमान के आने से संघ के दरवाजे मुसलमानों के लिए खुल जाएंगे? प्रधानमंत्री मोदी, अमित शाह और मुख्यमंत्री फडणवीस 'हिंदू और मुसलमान' के बीच नफरत की राजनीति कर रहे हैं। असम के मुख्यमंत्री ने अपना एक पोस्टर लगाया है, जिसमें वे हाथ में बंदूक लिए मुसलमानों की ओर इशारा कर रहे हैं और संघ के प्रधानमंत्री इस पर चुप हैं।

आग की घटनाएं रोकने को जलस्रोतों का रखरखाव जरूरी

"जलवायु बदलाव व इंसानी हस्तक्षेप से हिमालयी जंगलों में आग लगने से वन संपदा व जीवों के साथ मानवीय क्षति भी हो रही है। जाड़ों में आग लगना और गंभीर मामला है। आग तुरंत नहीं बुझायी जा सकती। ऐसे में वन पंचायतों की मजबूती व जलस्रोतों का बेहतर रखरखाव जरूरी है।"

उत्तराखंड के पहाड़ों में पिछले साल दिसम्बर माह में गढ़वाल मंडल में टिहरी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग व चमोली के जंगलों में आग लगने की खबरें आने लगी थीं। उस समय जोशीमठ, बदरीनाथ व केदारनाथ के वन क्षेत्रों में भी आग लगी थी। केदारनाथ सेंक्चुरी व बागेश्वर के ग्लेशियर्स वन क्षेत्र भी प्रभावित हुए थे। जनवरी, 2026 के आखिरी सप्ताह तक जब तक हल्की बारिश और हिमपात नहीं हुआ था, छिटपुट वनाग्नियां लगती रहीं। अब फिर इस माह यानी फरवरी में खासकर कुमाऊं में चीड़ बहुल क्षेत्रों में आग लगने की खबरें आ रही हैं।

ऐसे में जब देश में फायर सीजन निचले इलाकों में फरवरी के बाद ही माना जाता है तो मौसम बदलाव के दौर में जाड़ों के माह की दावाग्नियों को गंभीरता से लेना चाहिए। ठंड के दिनों में जंगल की आग की घटना में ग्रामीण रात-रात भर जागकर आग बुझाने की कोशिश कर रहे हैं। हिमालयी दुर्गम क्षेत्रों में जाड़ों में पहुंचना ज्यादा मुश्किल हो जाता है।

जनवरी, 2016 में कई जगहों पर जंगलों में आग लगी थी। इस तरह से जंगलों में जाड़ों में लगने वाली आगों से निपटने की कोई तैयारी नही थीं। हालांकि, उस समय कई सौ करोड़ रुपयों की राज्य जलवायु बदलाव कार्य योजना लागू थी। वर्ष 2017 में ही उत्तराखंड वन विभाग के शीर्ष अधिकारियों का कहना था कि सभी वन प्रभाग अपनी-अपनी कार्ययोजनायें उत्तराखंड स्टेट क्लाइमेट चेंज एक्शन प्लान के व्यवहारों व पद्धतियों के अनुरूप बनायेंगे। ऐसा हुआ होता तो जाड़ों की वनाग्नियां लगातार बढ़ती न रहतीं। सवाल है कि 2014 के बाद जो स्टेट क्लाइमेट चेंज एक्शन प्लान राज्य में जारी है, और जिसकी नोडल एजेंसी वन विभाग ही है, वह वनाग्नि कम करने में नाकारा क्यों है?

मध्य भारत व पूर्वोत्तर के राज्यों में देश की करीब तीन-चौथाई जंगलों में आग लगने की घटनायें होती हैं। जब मध्य फरवरी से ही सामान्य फायर सीजन शुरू हो जाता है, तो जनवरी में वैसे भी फायर लाइन खींचने, नीचे गिरे झाड़-झंखाड़ और पत्तियों को जमा करने के लिए वन कर्मी मौजूद रहते हैं। ऐसे में मानवीय असावधानियों या जानबूझकर आग लगाने पर रोक तब भी लगाई जा सकती है।

वर्ष 2016 में उत्तराखंड में व्यापक पैमाने पर जंगलों में आग लगी थी। उस समय नैनीताल हाईकोर्ट के निर्देशानुसार वनाग्नि आपदाओं के प्रबंधन के लिए गांव स्तर पर भी कमेटियां गठित करनी थीं। लेकिन एक याचिका के जरिये हाईकोर्ट के संज्ञान में लाया गया कि 2021 अप्रैल तक भी ग्रामस्तरीय कमेटियां गठित नहीं हुईं। दरअसल देश में उत्तराखंड की पहचान उन राज्यों में होती है, जहां वनाधिकार कानून लागू करने में उदासीनता रही है। मोटर मार्ग भी जलते जंगलों की चपेट में आ जाते हैं। स्कूल जाने के एक-तिहाई रास्ते आग संभावित जंगलों से गुजरते हैं। वहीं स्मॉग से आंख, नाक व फेफड़ों के रोग भी बढ़ जाते हैं।

जंगलों की आग का प्रबंधन और रोकथाम राज्यों का विषय है। हर राज्य की दावानलों के प्रबंधन की अपनी कार्ययोजना होती है। वर्ष 2000 में राज्य बनने के बाद उत्तराखंड की लगभग पचास हजार हेक्टेयर भूमि वनाग्नियों की भेंट चढ़ चुकी है। राज्य का 38000 वर्ग किलोमीटर यानी 71 प्रतिशत क्षेत्र जंगल का है। दरअसल, मौसम में बदलाव को भी वैज्ञानिक जंगलों में आग लगने का कारण मानते हैं। मार्च से तो जंगलों में आग लगना स्वाभाविक ही मान लिया जाता है। इस बार जाड़े के माह सूखे ही रहे।

वैसे जंगलों की आग या तो बरसात से बुझती है या फिर ग्रामीणों के सामूहिक प्रयास से। कई बार इन प्रयासों में ग्रामीण केवल झुलसते ही नहीं हैं, बल्कि मृत्यु भी हो जाती है। वर्ष 2015 में आग बुझाने के प्रयास में दो महिलाएं मरी थीं। मई, 2009 में पौड़ी में वनों में लगी आग बुझाने की कोशिश के दौरान आठ ग्रामवासियों ने प्राणों की आहुति दी थी। असल में जहां अवैध शराब की भट्टियां हों, कटान हो रहे हों या वन तस्कर दुर्लभ जानवर मारने को आग जलाये हों, वहां आग बुझाने जाना स्थानीय जन के लिए खतरनाक हो जाता है। आग लगने के लक्षण बताते हैं कि पहाड़ों में जंगलों के जलस्रोत सूखते जा रहे हैं। कम बर्फ के चलते ऊचांइयों पर ज्वलनशील चीड़ की पहुंच बढ़ती जा रही है। बाघ, तेंदुआ जैसे जंगली जानवर और तराई के जंगलों में हाथी भी पानी की तलाश में भी जंगलों से बाहर निकल रहे हैं। अतः इस समय बड़े पैमाने पर जंगलों में जलाशय बनाने की जरूरत है। उन्नीसवीं शताब्दी में ही जब अंग्रेजी हुकूमत ने कुमाऊं-गढ़वाल के पर्वतीय क्षेत्रों में वनों पर सरकारी स्वामित्व स्थापित करने के प्रयास किये तो ग्रामीणों ने इसका विरोध करना प्रारंभ कर दिया। इन आंदोलनों के चलते 1930 में जनता से समझौते के तहत पंचायती वन प्रणाली लागू की गयी थी। विडंबना यह कि अंग्रेजों के समय की सशक्त वनप्रणालियां धीरे-धीरे कमजोर कर दी गई। हालांकि, आज भी वन पंचायतें हैं लेकिन वे देशी-विदेशी फंडों से संचालित व सरकारी विभागों से नियंत्रित होने लगी हैं। उत्तराखंड की वन पंचायत प्रणाली में सरकारीकरण बढ़ाकर उसे कमजोर करने से वन अधिकार अधिनियम 2006 में भी कमजोरी आयेगी।

दरअसल ग्रीन बोनस में वन पंचायतों को सशक्त हितग्राही बनाया जाना चाहिए, क्योंकि पहाड़ी खेती, पशुपालन, जलापूर्ति आदि बहुत कुछ जंगलों पर ही निर्भर करते हैं। यदि आग को त्वरित रूप से नहीं बुझाया जाता है, तो गांवों के बीच पैदल मार्गों और वन विभाग के विभिन्न क्षेत्रों में नमी बनाए रखने, जलस्रोतों, तालाबों आदि के रख-रखाव के लिए और जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए। वनों में यदि नमी मौजूद रहेगी तो जंगलों की आग में उग्रता नहीं आयेगी।

प्रेरणा

एक सैनिक, एक वचन और जीवन से चुकाया ऋण

युद्ध का शोर थम चुका था। रणभूमि पर फैली राख और धुएँ के बीच शांति का भ्रम था, लेकिन सैनिकों के जीवन में सुकून नाम की चीज़ आसानी से नहीं आती। युद्ध के बाद का समय भी उतना ही कठोर होता है, क्योंकि सतर्कता में थोड़ी-सी ढील भी बड़ी त्रासदी का कारण बन सकती है। ऐसे ही हालात में सिपाही विलियम स्कॉट अपनी ड्यूटी पर तैनात था। उसने दिनभर कठिन परिश्रम किया था, शरीर थकान से टूट चुका था, फिर भी जब उसके एक साथी ने अस्वस्थता के कारण रात की पहरेदारी करने में असमर्थता जताई, तो विलियम ने बिना किसी हिचक के उसका स्थान लेने का निर्णय कर लिया। यह फैसला किसी पद या प्रशंसा की लालसा में नहीं था, बल्कि उस सैनिक भावना का परिणाम था, जिसमें अपने साथी के लिए खुद को पीछे रखना स्वाभाविक माना जाता है।

रात गहराती चली गई। चारों ओर सन्नाटा पसरा था। ठंडी हवा शरीर को सुन्न कर रही थी। विलियम अपनी पूरी कोशिश कर रहा था कि उसकी आँखें खुली रहें, लेकिन शरीर अब मन का साथ नहीं दे रहा था। लगातार कई घंटों की ड्यूटी और मानसिक थकावट ने उसे विवश कर दिया। अनजाने में ही उसकी पलकों ने साथ छोड़ दिया और वह खड़े-खड़े नींद में चला गया। यही वह क्षण था, जिसने उसके पूरे जीवन की दिशा बदल दी।

संयोग से उसी समय एक वरिष्ठ अधिकारी निरीक्षण के लिए वहाँ पहुँचा। सैन्य अनुशासन की दृष्टि से पहरे पर सोना एक गंभीर अपराध था। अधिकारी ने विलियम को रंगे हाथों पकड़ लिया। न कोई सफाई सुनी गई, न परिस्थिति पर सहानुभूति दिखाई गई। उसे तुरंत हिरासत में ले लिया गया। सैन्य न्यायालय बैठा, नियमों के अनुसार सुनवाई हुई और फैसला सुना दिया गया—प्राणदंड। विलियम के लिए यह किसी वज्रपात से कम नहीं था। उसने सोचा भी नहीं था कि अपने साथी की मदद करना और थकान के कारण हुई एक चूक उसकी जान ले लेगी। यह खबर राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन तक पहुँची। लिंकन केवल एक शासक नहीं थे, बल्कि संवेदनशील हृदय वाले नेता थे। उन्होंने युद्ध में सैनिकों के त्याग को बहुत करीब से देखा था। उन्हें लगा कि इस मामले में केवल कानून के कठोर शब्दों से न्याय नहीं होगा। उन्होंने स्वयं उस सैनिक से मिलने का निर्णय लिया, जिसे मृत्यु की सज़ा दी जा चुकी थी।

कारागार में जब विलियम ने राष्ट्रपति लिंकन को देखा, तो वह भावनाओं पर काबू नहीं रख सका। उसे लगा जैसे उसकी अंतिम उम्मीद स्वयं उसके सामने खड़ी हो। वह राष्ट्रपति के चरणों में गिर पड़ा। लिंकन ने उसे उठाया और शांत, लेकिन दृढ़ स्वर में कहा कि वे उसकी सज़ा माफ करवा सकते हैं, मगर इसके बदले उसे एक कर्ज चुकाना होगा। यह सुनकर विलियम घबरा गया। उसने सोचा कि शायद यह आर्थिक दंड होगा। उसने कहा कि वह अपनी जान बचाने के लिए घर-बार बेचकर पाँच-छह सौ डॉलर तक देने को तैयार है।

राष्ट्रपति ने उसकी बात सुनी और कहा कि यह कर्ज धन से नहीं चुकाया जा सकता। यह इतना बड़ा है कि न उसके रिश्तेदार और न ही उसके पूर्वज इसे चुका सकते हैं। यह कर्ज केवल वही स्वयं चुका सकता है। विलियम के मन में सवाल उठने लगे। उसने साहस जुटाकर पूछा कि वह यह कर्ज कैसे चुकाएगा। तब लिंकन ने कहा कि यदि वह जीवन भर ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और निष्ठा के साथ अपना फर्ज निभाएगा, तो वे मान लेंगे कि कर्ज चुका दिया गया है।

यह कोई साधारण शर्त नहीं थी। यह जीवन को एक नैतिक अनुबंध में बाँध देने जैसा था। विलियम ने बिना किसी हिचकिचाहट के यह वचन स्वीकार कर लिया। राष्ट्रपति ने उसकी प्राणदंड की सज़ा माफ कर दी। विलियम जेल से बाहर आया, लेकिन उसके मन में अब एक अदृश्य ऋण का भार था। वह जानता था कि यह कर्ज केवल शब्दों से नहीं, बल्कि पूरे जीवन के आचरण से चुकाना होगा।

उसके बाद विलियम का जीवन बदल गया। वह हर ड्यूटी को पहले से अधिक गंभीरता से निभाने लगा। उसके व्यवहार में एक अलग ही दृढ़ता झलकने लगी। उसके साथी सैनिकों को महसूस हुआ कि वह अब केवल आदेश मानने वाला सिपाही नहीं रहा, बल्कि अपने हर कार्य में एक गहरे संकल्प के साथ जुड़ा हुआ व्यक्ति बन गया है। वह जानता था कि उसका जीवन अब केवल उसका अपना नहीं, बल्कि एक वचन से बंधा हुआ है।

कुछ समय बाद परिस्थितियाँ फिर बदलीं। युद्ध की आग एक बार फिर भड़क उठी। इस बार संघर्ष और भी उग्र था। विलियम बिना किसी भय के युद्धभूमि में उतर गया। गोलियों की आवाज़, विस्फोटों की गूंज और चारों ओर फैला मृत्यु का साया—इन सबके बीच वह असाधारण साहस के साथ लड़ता रहा। वह आगे बढ़कर मोर्चा संभालता, अपने साथियों को हौसला देता और घायल सैनिकों को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने में मदद करता।

युद्ध के दौरान एक भीषण हमले में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे महसूस हो गया कि उसके जीवन की अंतिम घड़ी निकट है। उस क्षण उसके मन में कोई पछतावा नहीं था। उसे एक गहरी शांति का अनुभव हो रहा था। उसे लगा कि उसने अपने जीवन का उद्देश्य पूरा कर लिया है। मरने से कुछ समय पहले उसने राष्ट्रपति लिंकन के नाम एक संदेश भिजवाया। उस संदेश में लिखा था कि उसने अपना कर्ज चुका दिया है।

विलियम स्कॉट वीरगति को प्राप्त हुआ। उसका जीवन यह सिखा गया कि सच्चा ऋण वह नहीं होता, जो धन से चुकाया जाए, बल्कि वह होता है, जो आत्मा और चरित्र से जुड़ा होता है। यह कहानी केवल एक सैनिक की नहीं, बल्कि उस मूल्य की है, जिसमें बलिदान सबसे बड़ी अदायगी बन जाता है और ईमानदारी सबसे बड़ा सम्मान।

राष्ट्रीय मिशन बने महाशक्ति बनना

कुछ समय पहले भारी मुनाफा कमाने वाली एक भारतीय कंपनी ने एक छोटी सी चीनी कंपनी से सौर ऊर्जा से जुड़ी तकनीक खरीदनी चाही, परंतु उसने देने से मना कर दिया। यह तब हुआ, जब भारत अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस का संस्थापक है। भारत ने फ्रांस के साथ इस अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना 2015 में की थी। यह अपनी तरह का पहला बड़ा संगठन है, जिसका मुख्यालय भारत में स्थित है। इसका उद्देश्य 125 सदस्य देशों के साथ मिलकर 2030 तक सौर ऊर्जा उत्पादन में एक ट्रिलियन डॉलर का निवेश और 1000 गीगावाट सौर ऊर्जा का उत्पादन है। चीन को कई बार इसमें शामिल होने का न्योता दिया गया, पर उसने स्वीकार नहीं किया।

विडंबना यह है कि ऐसे अंतरराष्ट्रीय संगठन के अगुआ भारत की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक को चीन की छोटी सी कंपनी के पास ही सौर ऊर्जा से जुड़ी तकनीक मांगने जाना पड़ा। इसका कारण यह है कि हजारों करोड़ रुपये प्रति तिमाही का मुनाफा कमा रही भारतीय कंपनियां भी नई तकनीक के अनुसंधान में भारत में निवेश नहीं करना चाहती हैं। वे खुदरा माल-सेवाओं के आपूर्तिकर्ता मात्र के रूप में अपने व्यापार का विस्तार कर रही हैं और टेक्नोलाजी के लिए दूसरे देशों पर निर्भर हैं। इसी कमजोरी के चलते हम विश्व स्तर पर नेतृत्व देने में अक्षम हैं। विश्व शक्तियां हमें अक्षम ही बने रहने देना चाहती हैं। इसका ताजा उदाहरण अमेरिका के नेतृत्व वाला पैक्स सिलिका गठजोड़ है।

पैक्स सिलिका महत्वपूर्ण तकनीकी क्षेत्रों में काम आने वाले दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति और प्रसंस्करण से जुड़ी आपूर्ति श्रृंखलाओं को पिरोकर चीन जैसे देशों के इस क्षेत्र पर नियंत्रण से निकलने के उद्देश्य से बनाया गया है। पहले भारत ने इससे जुड़ने की इच्छा जताई थी, परंतु ट्रंप प्रशासन ने उसे नकार दिया था। इस पर भारत के कुछ उद्योगपतियों ने कहा था कि यदि सरकार उनके साथ सहयोग करे तो वे दुर्लभ खनिजों का खनन और प्रसंस्करण भारत में कर सकते हैं।

भारत के पास चीन और ब्राजील के बाद दुर्लभ खनिजों का विश्व का तीसरा सबसे बड़ा भंडार है, जबकि अमेरिका इस मामले में विश्व में सातवें नंबर पर है। ट्रंप साम-दाम-दंड-भेद का प्रयोग कर ग्रीनलैंड पर कब्जे के प्रयास में इसलिए जुटे, क्योंकि ग्रीनलैंड के पास विश्व का आठवां सबसे बड़ा दुर्लभ खनिजों का भंडार है। अगर अमेरिका ग्रीनलैंड को हासिल भी कर ले तब भी 3.4 मीट्रिक टन के साथ उसका स्थान सातवां ही रहेगा।

विचारणीय यह है कि दुर्लभ खनिजों के क्षेत्र में भारत को अमेरिका का पिछलग्गू बनना चाहिए या आत्मनिर्भर? जैसे ही भारतीय उद्योगपतियों ने स्वयं इन खनिजों के खनन और प्रसंस्करण करने की बात कही, अमेरिका ने तुरंत अपनी चाल बदलकर भारत को पैक्स सिलिका में जुड़ने के लिए आमंत्रित कर लिया। इसकी वकालत करने वाली एक लाबी के अनुसार इन दुर्लभ खनिजों का खनन और प्रसंस्करण बहुत जटिल प्रक्रिया है, इसलिए भारत का अमेरिका की अगुआई में काम करना आसान रहेगा, पर जब हमें यह सब आसानी से उपलब्ध होने लगेगा तो हम शिथिल पड़ जाएंगे और खनन और प्रसंस्करण तकनीकी में निवेश ही नहीं करेंगे। प्रश्न यह है कि इस जटिल काम को चीन ने कैसे कर लिया?

चीन 1986 में ही अमेरिका को पीछे छोड़ दुर्लभ खनिजों का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया था। 1985-95 के बीच चीन में इन खनिजों का उत्पादन 464 प्रतिशत बढ़ा। 2004 आते-आते चीन विश्व भर के 90 प्रतिशत दुर्लभ खनिजों का निर्यातक बन चुका था। आज चीन विश्व दुर्लभ खनिजों का 70 प्रतिशत खनन, 90 प्रतिशत शोधन और रेयर अर्थ मैग्नेट के 90 प्रतिशत उत्पादन को नियंत्रित करता है। जो काम चीन 1980-90 के दशक में कर पाया वह हम आज क्यों नहीं कर सकते? आत्मनिर्भरता क्या आत्मसंदेह से आएगी। जब विश्व ने परमाणु तकनीक भारत को देने से मना कर दिया था तो क्या हमने परमाणु बम नहीं बना लिया था? इसके उलट उदाहरण भी देख लीजिए।

हम हमेशा फाइटर जेट विदेश से आयात करते रहे हैं। इसके चलते हम आज तक इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो सके हैं, जबकि विश्व की हर महाशक्ति अमेरिका, रूस, फ्रांस, यूरोपीय संघ, चीन अपने फाइटर जेट और उसके इंजन स्वयं बनाते हैं। खबरें हैं कि भारत को एक बार फिर लाखों करोड़ रुपये खर्च करके फ्रांस, रूस या अमेरिका में से किसी एक से फाइटर जेट आयात करने पड़ेंगे, क्योंकि भारतीय वायुसेना के पास लड़ाकू विमानों के बस अब मात्र 29 स्क्वाड्रन ही बाकी रह गए हैं, जबकि होने कम से कम 42 स्क्वाड्रन चाहिए। यह स्थिति इसलिए है, क्योंकि तेजस का उत्पादन समय से नहीं हो पाया और स्वदेशी जेट इंजन बनाने का कार्यक्रम भी अधूरा ही रहा।

1989 में प्रारंभ किए गए कावेरी जेट इंजन कार्यक्रम में भारत ने 2008 तक मात्र 2000 करोड़ रुपये का निवेश किया और फिर उसे असफल पाकर तेजस प्रोजेक्ट से अलग कर दिया। पिछले 40 साल में भारत ने कावेरी इंजन कार्यक्रम पर अधिकतम 5000 करोड़ रुपये खर्च किए हैं, जबकि चीन तीन लाख पचास हजार करोड़ रुपये खर्च कर चुका है। आज चीन के पास छठी पीढ़ी के स्वनिर्मित लड़ाकू विमान जे-20 के लिए अपना जेट इंजन तैयार है, जबकि हम चौथी पीढ़ी के लड़ाकू विमान विदेश से खरीदने के लिए तीन-चार लाख करोड़ रुपये खर्च करने वाले हैं। क्या कोई यह वादा कर सकता है कि हम अंतिम बार विदेशी लड़ाकू विमान खरीदने जा रहे हैं?

चीन छठी पीढ़ी के 100-120 लड़ाकू विमान बना रहा है और हम चौथी पीढ़ी के 6-12 जहाज बना पा रहे हैं। कारण यह है कि इसके इंजन के लिए हम अमेरिका पर निर्भर हैं। तीन-चार लाख करोड़ रुपये विदेशी लड़ाकू विमानों पर खर्च करने के बाद हमारी सरकार स्वदेशी जेट इंजन के विकास पर कितना खर्च कर पाएगी, यह भी विचारणीय है। जब तक इन सेक्टरों में आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय मिशन नहीं बनाया जाएगा, तब तक भारत के एक आत्मनिर्भर विश्वशक्ति बनने पर प्रश्नचिह्न लगा रहेगा।

अभियान

अज्ञान की गहन अंधेरी अवस्था से आत्मिक जागरण और दिव्य परिवर्तन का पर्व

महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक तिथि या परंपरागत उत्सव नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना के इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ है। यह वह दिव्य अवसर है, जब समस्त मानव आत्माओं के परमपिता, परमात्मा शिव का अवतरण स्मरण किया जाता है। अन्य देवी-देवताओं की जयंती या जन्मोत्सवों से यह पर्व इसलिए भिन्न और सर्वोपरि माना जाता है, क्योंकि परमात्मा शिव का जन्म नहीं होता, वे अवतरित होते हैं। वे अजन्मा, स्वयंभू, निराकार और शाश्वत हैं, जो समय-समय पर मानव समाज के गहन पतन को देखकर स्वयं हस्तक्षेप करते हैं। महाशिवरात्रि का संदेश किसी एक धर्म, संप्रदाय या देश तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए आत्मिक पुनर्जागरण का आह्वान है। सृष्टि चक्र के अनुसार जब मानव समाज अपनी चरम आध्यात्मिक उन्नति से धीरे-धीरे पतन की ओर बढ़ता है, तब आत्मिक मूल्यों का क्षरण शुरू हो जाता है। सतयुग और त्रेता युग, जिन्हें ब्रह्मा का दिन कहा गया है, दैवी गुणों, पवित्रता, शांति और प्रेम से परिपूर्ण होते हैं। इसके विपरीत द्वापर और कलियुग ब्रह्मा की रात्रि के समान हैं, जहाँ आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाती है। कलियुग में बाहरी विकास तो दिखाई देता है, लेकिन भीतर से मानव अशांत, असंतुलित और दुखी हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे विकार मानव जीवन पर पूरी तरह हावी हो जाते हैं। यही अवस्था अज्ञान की रात्रि कहलाती है, जिसमें आत्मा जागते हुए भी सोई रहती है। महाशिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की अंधेरी रात्रि को मनाई जाती है। यह तिथि केवल खगोलीय या पंचांग आधारित नहीं है, बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक संकेत है। यह वह समय दर्शाती है, जब अज्ञान, तमोगुण और अपवित्रता अपने चरम पर होती है। ठीक इसी अंधेरी रात्रि में परमात्मा शिव ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करते हैं। राजयोगिनी शिक्षिका बी.के. पूनम बहन के अनुसार महाशिवरात्रि में 'रात्रि' शब्द चेतना की उस अवस्था का प्रतीक है, जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप और परमात्मा से अपने संबंध को भूल चुकी होती है। ऐसे समय में शिव अवतरित होकर आत्माओं को ज्ञान के प्रकाश से जागृत करते हैं। भारत सहित विश्वभर में महाशिवरात्रि अत्यंत श्रद्धा और आस्था के साथ मनाई जाती है। शिव मंदिरों में भक्तों की लंबी कतारें लगती हैं। शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा, भांग और अक के फूल अर्पित किए जाते हैं। उपवास रखा जाता है और रात्रि जागरण किया जाता है। सामान्य दृष्टि से ये सभी क्रियाएं कर्मकांड प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन इनके पीछे अत्यंत गहन आध्यात्मिक अर्थ छिपा है। शिवलिंग निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा का प्रतीक है, जो रूप, रंग और सीमाओं से परे है। बेलपत्र और अन्य सामग्री हमारे भीतर के विकारों और नकारात्मक प्रवृत्तियों का प्रतीक हैं, जिन्हें हम परमात्मा के चरणों में अर्पित कर त्यागने का संकल्प लेते हैं। उपवास का अर्थ केवल अन्न त्याग नहीं, बल्कि विकारों से दूरी बनाना है, और रात्रि जागरण का तात्पर्य आत्मा का अज्ञान की नींद से जागना है। परमात्मा शिव को सत्-चित्-आनंद स्वरूप कहा गया है। वे जीवन और मृत्यु के चक्र से परे हैं। वे किसी लोक में सीमित नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि के नियंता और साक्षी हैं। कलियुग के अंतिम चरण में वे साधारण मानव तन में प्रवेश कर मानव आत्माओं को ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं। यह ज्ञान आत्मा को यह बोध कराता है कि वह शरीर नहीं, बल्कि एक अविनाशी चेतन सत्ता है। राजयोग के अभ्यास से आत्मा परमात्मा से बुद्धियोग जोड़कर अपनी खोई हुई शक्तियों को पुनः प्राप्त करती है। यही योग आत्मा को पवित्र, शांत और शक्तिशाली बनाता है।

महाशिवरात्रि केवल अतीत की घटना का स्मरण नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य से गहराई से जुड़ा हुआ पर्व है। यह सृष्टि परिवर्तन का सूचक है। जब आत्माएं परमात्मा के ज्ञान को धारण कर अपने जीवन में उतारती हैं, तब धीरे-धीरे समाज और विश्व का स्वरूप बदलने लगता है। यह परिवर्तन हिंसा, संघर्ष और अशांति से भरी पुरानी दुनिया के अंत और सुख, शांति व समृद्धि से युक्त नई दुनिया की स्थापना की ओर संकेत करता है। जैसे वसंत ऋतु आने पर प्रकृति में नवजीवन का संचार होता है, वैसे ही महाशिवरात्रि आत्मिक वसंत का आगमन है।

आज का मानव विज्ञान, तकनीक और भौतिक उपलब्धियों में जितना आगे बढ़ा है, उतना ही वह मानसिक तनाव, अवसाद और असुरक्षा से घिरा हुआ है। बाहरी सुख क्षणिक हैं और भीतर की खालीपन को भर नहीं पाते। महाशिवरात्रि हमें याद दिलाती है कि स्थायी सुख और शांति का स्रोत बाहर नहीं, बल्कि भीतर और परमात्मा से संबंध में है। यही कारण है कि यह पर्व मानव को स्वयं की ओर लौटने का संदेश देता है। इस पावन अवसर पर परमात्मा शिव समस्त आत्माओं को ईश्वरीय निमंत्रण देते हैं। वे कहते हैं कि अब समय आ गया है कि आत्माएं अपने विकारों का त्याग करें और दैवी गुणों को धारण करें। यह संगमयुग है, जब पुरानी पतित दुनिया का अंत और नई पावन सृष्टि की शुरुआत होती है। महाशिवरात्रि का संदेश अत्यंत स्पष्ट और सशक्त है—अभी नहीं तो कभी नहीं। यदि इस समय आत्मा परमात्मा से बुद्धियोग जोड़ लेती है, तो उसका जीवन ही नहीं, आने वाला भविष्य भी धन्य हो जाता है।

महाशिवरात्रि मानव आत्मा और परमात्मा के मिलन का वह दिव्य पर्व है, जो अज्ञान की रात्रि को समाप्त कर ज्ञान के प्रभात का मार्ग प्रशस्त करता है। यह पर्व केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन के दृष्टिकोण को बदलने का अवसर है। जब आत्मा परमात्मा शिव के ज्ञान से जुड़ती है, तब उसका भय, दुख और अशांति स्वतः समाप्त होने लगते हैं। यही इस पर्व की वास्तविक महिमा और सार है। महाशिवरात्रि हमें यह स्मरण कराती है कि अंधकार चाहे कितना ही गहरा क्यों न हो, ज्ञान की एक किरण उसे समाप्त करने के लिए पर्याप्त होती है, और वह किरण स्वयं परमात्मा शिव हैं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

भक्ति, संस्कृति एवं प्रकृति के संगम के साथ 11 फरवरी से गिरनार की तलहटी में भवनाथ मंदिर पर ध्वजारोहण के साथ महाशिवरात्रि मेले का विधिवत प्रारंभ होगा

▶▶ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में पवित्र साधु संतों का भव्य नगर प्रवेश कराया जाएगा
▶▶ श्रद्धालुओं को सभी सुविधा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार सज्ज

▶▶ सांस्कृतिक विरासत को प्रज्वलित करने के लिए इस वर्ष पहली बार भव्य 'डमरू यात्रा' का आयोजन
▶▶ सर्व समाज की बेटियां कलश धारण कर संतों का स्वागत करेंगी
▶▶ 800 से अधिक भक्तों के रहने के लिए आराम दायक सुविधा
▶▶ 25 स्थानों पर वाहनों के लिए सुरक्षित पार्किंग की व्यवस्था

जीएनएस)। गांधीनगर : देवाधिदेव महादेव के सानिध्य में भक्ति, संस्कृति तथा प्रकृति के संगम के साथ जूनागढ के पवित्र भवनाथ गिरनार की तलहटी में परंपरागत रूप से विश्व प्रसिद्ध 'महाशिवरात्रि मेले' का आयोजन होगा। इस वर्ष आगामी 11 फरवरी से भवनाथ मंदिर पर ध्वजारोहण के साथ महाशिवरात्रि मेले का विधिवत् प्रारंभ होगा। पांच दिनों तक आयोजित होने वाले इस अलौकिक मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड और स्थानीय प्रशासन द्वारा विभिन्न सुविधाओं के साथ विशेष आयोजन किया गया है।

जूनागढ के सुप्रसिद्ध महाशिवरात्रि मेले की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने के लिए इस वर्ष पहली बार भव्य 'डमरू यात्रा' का आयोजन किया गया है, जिसमें उप मुख्यमंत्री भी सहभागिता करेंगे। इतिहास में पहली बार सर्व समाज की बेटियां कलश धारण कर संतों का स्वागत करेंगी। इस भव्य डमरू यात्रा मेले के पहले दिन, यानी 11 फरवरी को शाम 7 बजे भवनाथ प्रवेश द्वार से शुरू होकर भवनाथ मंदिर तक लगभग 400 मीटर के मार्ग पर भक्तिमय वातावरण में निकलेगी। यात्रा के समापन के बाद भवनाथ मंदिर में भव्य महाआरती का भी सुंदर आयोजन किया गया है।

गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड द्वारा यात्रियों के रात्रि विश्राम को आरामदायक बनाने के लिए 800–850 भक्तों की क्षमता वाला विशाल

जर्मन डोम तैयार किया गया है। भक्तों के लिए 2,000 वर्गमीटर में फैले इस डोम में 700 पलंग और 150 फ्लोर बेडिंग की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही 24×7 हाउसकीपिंग, मेडिकल सहायता, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट्स और सामान रखने के लिए अलग लगेज रैक जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं। मेले में आने वाले नागरिकों के वाहनों के व्यवस्था के लिए उपरकोट, पांजरापोळ, वाघेश्वरी मंदिर जैसे 25 अलग- अलग स्थलों पर विशाल पार्किंग प्लोट्स बनाए गए है। नागरिकों के वाहनों की सुरक्षा के लिए प्रत्येक पार्किंग में सीसीटीवी कैमरा, पीने का पानी तथा शौचालय की भी व्यवस्था की गई है।

मेले के मार्गों और मंदिरों को और अधिक भक्तिमय बनाया जाएगा। जिसमें समग्र भवनाथ मेला क्षेत्र को 'भगवान भोलेनाथ' की थीम पर सजाया जाएगा। भवनाथ मंदिर का फूलों से श्रंगार और पूरे रवेडी मार्ग पर आकर्षक रोशनी की जाएगी। भवनाथ मंदिर, अखाड़े, दामोदर कुंड और 6 मुख्य प्रवेश द्वारों को आकर्षक रोशनी से जगमगाया जाएगा। मेले के रास्ते में 6 सेल्फी प्वाइंट आकर्षण का केंद्र बनेंगे। इसके अलावा पूरे मेला क्षेत्र में भगवान शंकर के कलात्मक चित्र भी उकेरे गए हैं। गिरनार द्वार से भवनाथ मंदिर तक के मार्ग पर सजावट और लाइटिंग भी की गई है।

भवनाथ तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा के लिए विभिन्न आधुनिक व्यवस्थाएं स्थापित की गई हैं। इसके अंतर्गत; पीने के शुद्ध पानी के लिए भवनाथ में 140 परब की व्यवस्था की गई है। पर्यावरण संरक्षण के लिए 10 बोतल क्रशर मशीन और किसी भी चिकित्सा आवश्यकता को पूरा करने के लिए 28 मेडिकल सुविधा काउंटर भी कार्यरत किए गए हैं। इसके अलावा, मेले के दौरान कुल 118 अस्थायी शौचालय तथा भवनाथ क्षेत्र में 6 मोबाइल शौचालय की व्यवस्था भी की गई है। इसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग व्यवस्था तथा 24×7 हाउसकीपिंग की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इन सभी पार्किंग स्थलों पर फ्लड लाइट, सैनिटेशन, सफाई, पीने के पानी की व्यवस्था तथा राउंड द क्लॉक पुलिस बंदोबस्त रहेगा। इसके लिए जिला स्तर पर पार्किंग समिति का गठन किया गया है। इन पार्किंग स्थलों से मुख्य दो प्वाइंट भरडावाव और गिरनार द्वार से श्रद्धालु भवनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे। पार्किंग स्थलों से विशेष रूप से दिव्यांगों को मेले तक पहुंचाने के लिए लगभग 25 रिक्षाओं द्वारा निःशुल्क परिवहन सुविधा प्रदान करने का आयोजन किया है।

स्थानीय प्रशासन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, लाइट एंड साउंड शो और सुरक्षा के लिए बैरिकेडिंग की व्यवस्था की गई है। महाशिवरात्रि की रात्रि में आयोजित होने वाली साधु-संतों की शाही रवेड़ी और मृगीकुंड में शाही स्नान मेले का मुख्य आकर्षण रहेगा।

'अतिथि देवो भवः' की भावना के साथ राज्य सरकार महाशिवरात्रि मेले को भक्ति, शक्ति और सुविधाओं का त्रिवेणी संगम बनाकर श्रद्धालुओं का स्वागत करने के लिए संपूर्ण सज्ज है।

गांधीधाम से आदिपुर के बीच 120 KMPH के स्पीड से चली ट्रेन, महावीर चक्र कैप्टन कपिल सिंह थापा इंजन के साथ

कांडला पोर्ट और मुंद्रा पोर्ट से मालवाहक ट्रेनों की रफ्तार दोगुनी

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी का कार्य पूर्ण हो गया है। इस रेल खंड का 9 और 10 फरवरी 2026 को रेल संरक्षा आयुक्त (CRS) पश्चिम सर्कल श्री ई. श्रीनिवास द्वारा संरक्षा निरीक्षण किया गया तथा 10 फरवरी को गांधीधाम से आदिपुर के बीच ट्रेन का 120 किमी प्रति घंटे की गति से स्पीड ट्रायल सफलतापूर्वक किया गया। गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी का कार्य पूर्ण होने से वर्तमान में जहां 50 से 60 मालगाड़ियों का संचालन इस क्षेत्र से हो रहा है जो बढ़कर 150 तक हो जाएगा तथा ट्रेनें 120 किमी प्रति घंटे (अधिकतम) की गति से चलाई जा सकेगी।

गांधीधाम–आदिपुर ब्रॉडगेज रेलखंड कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों सहित भुज, वायोर और अन्य क्षेत्रों को देश के विभिन्न भागों से जोड़ने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण माल ढुलाई मार्ग है। वर्तमान में यह खंड अत्यधिक व्यस्त रहने से परिचालन पर दबाव बना रहता है, जिसे कम करने के लिए दो अतिरिक्त लाइनों की आवश्यकता थी। इस मार्ग से नमक एवं अन्य माल की भी बड़े पैमाने पर ढुलाई होती है और मुंद्रा बंदरगाह की बढ़ती क्षमता को देखते हुए भविष्य में यातायात और बढ़ने की संभावना है।

इस परियोजना से कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों से जुड़े कंटेनर, पेट्रोलियम, उर्वरक, खाद्यान्न एवं अन्य माल के परिवहन में तेजी आएगी। मालगाड़ियों का टर्नअराउंड समय कम होगा, वैगनों का बेहतर उपयोग संभव होगा तथा लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी, जिससे उद्योगों और व्यापार को सीधा लाभ मिलेगा। साथ ही यह परियोजना कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक विकास को गति देने, व्यापार, पर्यटन एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा निवेश के अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

गोपालपुर नए स्टेशन के निर्माण से अहमदाबाद की ओर से आने वाली गाड़ियों को भुज जाने के लिए गांधीधाम में इंजन रिवर्सल की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे लगभग 20-25 मिनट की समय बचत होगी। आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी उपलब्ध होने से ट्रेनों को दिशा परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा, जिससे समय एवं ईंधन दोनों की बचत होगी और परिचालन सरल बनेगा।

गांधीधाम–आदिपुर चौहरीकरण एवं 'वाई' कनेक्टिविटी परियोजना क्षेत्रीय विकास और सुदृढ़ रेल अवसंरचना की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो कच्छ क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

मुंबई फ्लावर शो 2026 में पश्चिम रेलवे की शानदार उपलब्धि,चार ट्रॉफियों सहित "बॉम्बारसी" के लिए प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया

जीएनएस)। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) एवं ट्री अथॉरिटी द्वारा 06 फरवरी से 08 फरवरी 2026 तक वीरमाता जीजाबाई भोसले वनस्पति उद्यान एवं प्राणिसंग्रहालय, मुंबई में आयोजित मुंबई फ्लावर शो 2026 में पश्चिम रेलवे ने चार ट्रॉफियां जीतकर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। इस वार्षिक आयोजन में पश्चिम रेलवे ने अनेक प्रतिष्ठित सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की संस्थाओं के साथ भाग लिया और विभिन्न श्रेणियों में सम्मान प्राप्त किया। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मुंबई फ्लावर शो के 29वें संस्करण में मध्य रेल, गोदरेज, बीपीसीएल, एचपीसीएल, आरसीएफ, हीरानंदानी, एमएमआरडीए, मुंबई अंतरराष्ट्रीय एयर पोर्ट सहित अनेक संस्थाओं ने भाग लिया। पश्चिम रेलवे ने अपने आकर्षक पुष्प सज्जा एवं थीम आधारित प्रदर्शनों को प्रस्तुत किया और विभिन्न श्रेणियों में कुल चार ट्रॉफियां जीतीं। ये ट्रॉफियां बृहन्मुंबई महानगरपालिका के गणमान्य अधिकारियों द्वारा प्रदान की गईं, जिनमें पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक का आवास "बॉम्बारसी" स्थित उद्यान के लिए गार्डेन श्रेणी में प्राप्त प्रथम पुरस्कार भी शामिल है।

पश्चिम रेलवे नियमित रूप से मुंबई फ्लावर शो तथा इस प्रकार की अन्य नागरिक पहलों में भाग लेता रहा है, जो रचनात्मकता के प्रदर्शन, हरियाली को बढ़ावा देने तथा आम जनता से जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं। यह सहभागिता पश्चिम रेलवे द्वारा पर्यावरण जागरूकता एवं सौंदर्यीकरण पहलों पर निरंतर दिए जा रहे जोर को भी दर्शाती है।

पश्चिम रेलवे पर्यावरण-अनुकूल पहलों के समर्थन तथा पर्यावरण चेतना और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के प्रति प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे द्वारा बांद्रा टर्मिनस–ओखा के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा यात्रियों की अतिरिक्त यात्री भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस और ओखा के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरों को विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 09561 बांद्रा टर्मिनस–ओखा साप्ताहिक स्पेशल को 01 अप्रैल 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09562 ओखा–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 31 मार्च 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09561 एवं 09562 के विस्तारित फेरों की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव के समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे चलाएगी तीन जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं होली त्योहार के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए, बांद्रा टर्मिनस–वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, बांद्रा टर्मिनस–सूबेदारगंज तथा असारवा–आगरा कैंट के बीच विशेष किराए पर तीन जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 02200/02199 बांद्रा टर्मिनस–वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल (08 फेरे)
ट्रेन संख्या 02200 बांद्रा टर्मिनस – वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी स्पेशल प्रत्येक शनिवार को बांद्रा टर्मिनस से 05.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 05.00 बजे वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी पहुंचेगी। यह ट्रेन 07 मार्च से 28 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 02199 वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी से 16.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 16.10 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 05 मार्च से 26 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, उधना, भरूच, वडोदरा, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी, बियावरा राजगढ़, चाचुरा बिनागंज, रूठियाई, गुना, शिवपुरी, ग्वालियर, डबरा एवं दतिया स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 04126/04125 बांद्रा टर्मिनस – सूबेदारगंज सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल (10 फेरे)
ट्रेन संख्या 04126 बांद्रा टर्मिनस–सूबेदारगंज सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक मंगलवार को बांद्रा टर्मिनस से 11.15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 17.00 बजे सूबेदारगंज पहुंचेगी। यह ट्रेन 03 मार्च से 31 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04125 सूबेदारगंज–बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक सोमवार को सूबेदारगंज से 05.20 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 09.30 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 02 मार्च से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, बयाना, रूपबास, फतेहपुर सीकरी, आगरा ईदगाह, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी एवं फतेहपुर स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 3-टियर, एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।
3. ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा – आगरा कैंट स्पेशल (सप्ताह में 5 दिन) [42 फेरे]
ट्रेन संख्या 01920 असारवा – आगरा कैंट स्पेशल मंगलवार एवं बुधवार को छोड़कर प्रतिदिन असारवा से 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा कैंट पहुंचेगी। यह ट्रेन 02 मार्च से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 01919 आगरा कैंट–असारवा स्पेशल सोमवार एवं मंगलवार को छोड़कर प्रतिदिन आगरा कैंट से 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी। यह ट्रेन 01 मार्च से 29 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली जं., चंदेरिया, मांडलगढ़, बूंदी, केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास एवं फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।
ट्रेन संख्या 02200, 04126 एवं 01920 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर 11 फरवरी, 2026 से शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भारतीय रेल पहली बार स्टेनलेस स्टील कंटेनर से करेगी औद्योगिक नमक का परिवहन

गांधीधाम क्षेत्र से स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का ऐतिहासिक लदान

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गांधीधाम क्षेत्र ने माल परिवहन के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। विश्व में पहली बार भारतीय रेलवे द्वारा स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का सफलतापूर्वक लदान गांधीधाम के नीलकंठ ज़ोन से किया गया। यह नवाचारपूर्ण पहल औद्योगिक थोक माल के सुरक्षित, स्वच्छ एवं उच्च दक्षता वाले परिवहन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुई है। माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी ने x पर पोस्ट कर से इस अभिनव पहल की सराहना की।

अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) ने कहाः कि स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का यह सफल परीक्षण भारतीय रेलवे की नवाचार-आधारित लॉजिस्टिक्स रणनीति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे न केवल संवेदनशील थोक माल का सुरक्षित और स्वच्छ परिवहन संभव होगा, बल्कि उद्योगों को तेज़, भरोसेमंद और पर्यावरण-अनुकूल फ्रेट समाधान भी प्राप्त होंगे। पश्चिम रेलवे 'फ्रेट ऑन रेल' को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में भी ऐसी अभिनव पहलों को निरंतर आगे बढ़ाती रहेगी।"

तेज़ और अत्यंत कुशल परीक्षण

इस परीक्षण (ट्रायल) के दौरान 34.2 टन औद्योगिक नमक की लोडिंग मात्र 15 मिनट में पूर्ण की गई, जबकि अनलोडिंग का कार्य केवल 5 मिनट में संपन्न हुआ। यह उपलब्धि रेलवे फ्रेट लॉजिस्टिक्स में त्वरित टर्नअराउंड समय और उच्च परिचालन दक्षता को दर्शाती है। लोडिंग कार्य कांडला विशेष आर्थिक क्षेत्र (KASEZ) के समीप स्थित वे-ब्रिज (Weigh Bridge) पर सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

तकनीकी विवरण

▶▶ कंटेनर प्रकारः स्टेनलेस स्टील कंटेनर
▶▶ लंबाईः 20 फीट
▶▶ ऊँचाईः 8.5 फीट
▶▶ चौड़ाईः 8.5 फीट

यह कंटेनर स्टेनलेस स्टील से निर्मित है तथा नमक एवं अन्य संक्षारक (corrosive) थोक वस्तुओं के परिवहन के लिए उपयुक्त है। इसकी उच्च जंग-रोधी क्षमता कंटेनर की लंबी आयु एवं माल की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। लदान की व्यवस्था साइलो प्रणाली अथवा ऊपर से प्रोकेलिन (Proclain) मशीन द्वारा की जा सकती है। प्रत्येक कंटेनर में 7 फीट × 4 फीट आकार के दो टॉप ओपनिंग दिए गए हैं, जिससे तेज़ यंत्रीकृत लदान संभव होता है।

प्रत्येक कंटेनर का टेयर वजन 3 टन है। एक BLCS/BLSS वैगन में दो कंटेनर लोड किए जा सकते हैं, जिससे प्रति वैगन 68.4 टन शुद्ध पेलोड प्राप्त होता है, जो BOXN खुले वैगनों के समकक्ष है। 48 वैगनों की एक पूर्ण BLSS रेक द्वारा लगभग 3,300 टन नमक का परिवहन किया जा सकता है।

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में नई दिशा

स्टेनलेस स्टील कंटेनर के उपयोग से औद्योगिक नमक जैसे थोक माल के परिवहन में निम्नलिखित लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैं:

▶▶ सुरक्षित एवं क्षरण-रहित परिवहन
▶▶ तेज़ लोडिंग और अनलोडिंग प्रक्रिया
▶▶ प्रदूषण-रहित एवं स्वच्छ हैंडलिंग
▶▶ कम टर्नअराउंड समय एवं बेहतर लॉजिस्टिक दक्षता

यह प्रणाली पारंपरिक BOXN लदान की तुलना में कई लाभ प्रदान करती है। इसमें वैगन की मैनुअल सफाई की आवश्यकता नहीं होती, तिरपाल लाइनिंग/कोटिंग की जरूरत समाप्त हो जाती है, लदान एवं उतारने का समय काफी कम होता है, माल की मिलावट एवं अपव्यय न्यूनतम होता है तथा वैगनों का टर्नअराउंड टाइम बेहतर होता है। इससे परिचालन दक्षता और यंत्रीकरण को बढ़ावा मिलता है।

नमक जैसे सूखे थोक माल के परिवहन हेतु स्टेनलेस स्टील कंटेनरों का यह उपयोग विश्व स्तर पर अपनी तरह का पहला प्रयास है, जो भारतीय रेल में कंटेनर आधारित थोक लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में एक बड़ी नवाचारी पहल है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने ऑल इंडिया इंटर रेलवे संगीत प्रतियोगिता के विजेता कलाकारों को किया सम्मानित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रदीप कुमार ने ऑल इंडिया इंटर रेलवे सांस्कृतिक संगीत प्रतियोगिता में विजयी रहे पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों को सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता में पश्चिम रेलवे द्वारा ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी भी गर्वपूर्वक अर्जित की गई, जो पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों में निहित समृद्ध सांस्कृतिक प्रतिभा को दर्शाती है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, चर्चगेट स्थित मुख्यालय के श्री चैतन्य परब ने शास्त्रीय गायन श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जबकि श्रीमती प्रेरणा बाजे ने सुगम संगीत गायन श्रेणी में द्वितीय स्थान हासिल किया। श्री विनीत अभिषेक ने आगे बताया कि महाप्रबंधक ने पुरस्कार विजेता कर्मचारियों एवं संपूर्ण टीम को उनकी सराहनीय उपलब्धियों के लिए बधाई दी तथा राष्ट्रीय स्तर पर पश्चिम रेलवे का नाम रोशन करने हेतु उनके समर्पण की प्रशंसा की। उन्होंने पश्चिम रेलवे की सांस्कृतिक टीम के सामूहिक प्रयासों की भी सराहना की, जिसके परिणामस्वरूप पश्चिम रेलवे को ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी प्राप्त हुई।

पश्चिम रेलवे अपने कर्मचारियों को सांस्कृतिक उत्कृष्टता प्राप्त करने एवं राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करती रही है।

पश्चिम रेलवे द्वारा बांद्रा टर्मिनस ⇌ ओखा के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के ट्रिप चलाई जाएगी

ट्रेन क्र.	से	तक	सर्विस का दिन	से विस्तृत
09561	बांद्रा टर्मिनस	ओखा	बुधवार	01/04/2026
09562	ओखा	बांद्रा टर्मिनस	मंगलवार	31/03/2026

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09561 के बढ़े हुए ट्रिप के लिए बुकिंग सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर खुली है। ऊपर बताई गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक करें और फॉलो करें:
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ रखें।

અમદાવાદ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન નોટીસ

અમદાવાદ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનની ખાસ સભા ગુરૂવાર તા.૧૯-૦૨-૨૦૨૬ના રોજ સવારના ૦૯-૩૦ વાગે મ્યુ.કમ્પાઉન્ડમાં છઠ્ઠા માળે આવેલ "મહાત્મા ગાંધી હોલ" માં નીચેના કામોના વિચાર કરવા સારૂ મળશે.

૧. અમદાવાદ નગર પ્રા.શિ.સમિતિનું સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના વર્ષનું અંદાજપત્ર મંજુર કરવા.
૨. શેઠ મા.જે. પુસ્તકાલયને સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના વર્ષ માટે ગ્રાન્ટ આપવા.
૩. શેઠ વા.સા. જનરલ હોસ્પિટલ, શેઠ ચિનાઈ પ્રસુતિગૃહ અને શેઠ કનૈયાલાલ મોતીલાલ સ્કુલ ઓફ પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએટ મેડિસીન અને રીસર્ચના સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના વર્ષની આવક અંદાજવાની, સામાન્ય અને અસામાન્ય ખર્ચ અંગે મ્યુ.કોર્પો.એ ગ્રાન્ટ આપવાની તથા રાજ્ય સરકારશ્રી પાસેથી ગ્રાન્ટ મેળવવાની.
૪. અ.મ્યુ.દ્વા.સ.નું સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ ના વર્ષનું અંદાજપત્ર-"બી" મંજુર કરવા.
૫. અ.મ્યુ.કોર્પો.ના સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના અંદાજપત્ર-"એ" ની તથા સને ૨૦૨૬-૨૦૨૭ના વર્ષની ટેક્ષેશન પ્રપોઝલની મંજુરી આપવા.

સરદાર પટેલ ભવન,
મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન,
અમદાવાદ તા. ૧૦-૦૨-૨૦૨૬

મેયરશ્રીના હુકમથી,
સહી : અરૂણ આર. પંડ્યા
મ્યુનિસિપલ સેક્રેટરી

छारी-ढंढ वेटलैंड में आने वाला यह प्रवासी पक्षी दुनियाभर के पक्षीप्रेमियों को करता है आकर्षित

- दुनियाभर के अनेक पर्यटक केवल 'ग्रे हाइपोकोलियस' पक्षी को देखने के लिए ही आते हैं छारी-ढंढ
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में आर्द्रभूमि क्षेत्रों के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए
- कच्छ के छारी-ढंढ वेटलैंड में पक्षियों की विविधता; विशेषकर ग्रे हाइपोकोलियस तथा व्हाइट-नेप्ड टिट को देखने के लिए 52 से अधिक देशों के (विदेशी) पर्यटक नियमित रूप से आते हैं

जीएनएस)। गांधीनगर : कच्छ जिले के छारी-ढंढ कंजर्वेशन रिजर्व को हाल ही में रामसर साइट का दर्जा मिला है। इस आर्द्रभूमि के आसपास 283 से अधिक प्रजाति के पक्षी दर्ज हुए हैं, परंतु यहाँ देखे जाने वाले दुर्लभ एवं प्रवासी पक्षी दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन पक्षियों में ग्रे हाइपोकोलियस मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। गुजराती में इसे 'मस्कती लटोरो' कहते हैं।

ग्रे हाइपोकोलियस (Hypocolius ampelinus) सबसे विशिष्ट तथा आकर्षक पक्षी है। पतली काया वाला यह पक्षी इराक, ईरान, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में प्रजनन करता है और 1990 से कच्छ के छारी-ढंढ के आर्द्रभूमि क्षेत्र में शीत ऋतु बिताने आता है।

विशेषज्ञों के अनुसार ग्रे हाइपोकोलियस सामान्यतः शुष्क झाड़ीदार क्षेत्रों, मरु (रण) प्रदेशों एवं निकटस्थ कृषि क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं। वे ज्यादातर छोटे समूहों में देखे जाते हैं तथा फलदार पेड़ तथा झाड़ियों के फल-बेर उनका आहार

होते हैं। विशेषकर; इस पक्षी को पिलुडी (Salvadora oleoides/persica) के फल 'पीलु' अति प्रिय हैं। शीत ऋतु के महीनों में दुनियाभर के पक्षीप्रेमी तथा शोधकर्ता इस दुर्लभ प्रवासी पक्षी को देखने के लिए छारी-ढंढ जरूर आते हैं।

पक्षी निरीक्षक कहते हैं कि ग्रे हाइपोकोलियस अक्टूबर-नवंबर के दौरान फुलाय गाँव के झाड़ी वाले जंगलों में आते हैं और मार्च या अप्रैल तक यहाँ रहते हैं। यह पक्षी मुख्यतः Salvadora persica के पके हुए बेर (स्थानीय रूप से 'पिलुडी' या 'खारी जार') पर निर्भर रहता है। इसके अतिरिक्त; यह 'टांकरा' नाम से जाने जाने वाले पौधे के फूल के बेर भी खाता है।

एक रिसर्च के अनुसार 22 और 23 मार्च, 1960 को कच्छ के बड़े रण में कुआर बेट (टापू) से ग्रे हाइपोकोलियस के दो सैम्पल एकत्र किए गए थे। इसके बाद 23 जनवरी, 1990 को पक्षीविद् श्री एस. एन. वरु ने बन्नी के घास वाले मैदानों में स्थित फुलाय गाँव में एक मादा ग्रे हाइपोकोलियस को देखा था। उनके इस निरीक्षण को एक महत्वपूर्ण पुनर्शोध माना जाता है। छारी-ढंढ वेटलैंड में ग्रे हाइपोकोलियस को देखने के लिए यह सबसे विश्वसनीय एवं श्रेष्ठ स्थल माना जाता है; जिसके कारण यह स्थल वैश्विक पर्यटकों, पक्षीप्रेमियों तथा वन्यजीव फोटोग्राफरों के लिए मुख्य आकर्षण बन गया है।

इसके अतिरिक्त; व्हाइट-नेप्ड टिट (Machlolophus nuchalis) पक्षी को देखने के लिए भी पर्यटक आते हैं। यह पक्षी दुनियाभर में केवल भारत में ही देखने को मिलता है और भारत में सबसे अधिक कच्छ में।

पश्चिम रेलवे चलाएगी असारवा और आगरा केंट के बीच स्पेशल ट्रेन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी फेस्टिवल सीजन के दौरान यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए असारवा और आगरा केंट के बीच स्पेशल ट्रेन विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है: ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा-आगरा केंट-असारवा स्पेशल (42 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 01920 असारवा-आगरा केंट स्पेशल 02 मार्च से 30 मार्च 2026 तक (मंगलवार और बुधवार को छोडकर) असारवा से प्रतिदिन 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा केंट पहुंचेगी। इस तरह ट्रेन संख्या 01919 आगरा केंट-असारवा स्पेशल 01 मार्च से 29 मार्च 2026 तक (सोमवार और मंगलवार को छोडकर) आगरा केंट से प्रतिदिन 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली, चंदेरिया, मांडल गढ़, बूंदी,

केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास और फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन सं. 01920 की बुकिंग 11 फरवरी 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

सोना वायदा में 319 रुपये, चांदी वायदा में 2381 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 43 रुपये की नरमी

जीएनएस)। मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 78453.11 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 15658.22 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 62794.42 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39287 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1525.9 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 12597.20 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 156001 रुपये के भाव पर खूलकर, 158070 रुपये के दिन के उच्च और 156001 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 158066 रुपये के पिछले बंद के सामने 319 रुपये या 0.2 फीसदी लुढ़ककर 157747 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 525 रुपये या 0.41 फीसदी घटकर 129085 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 24 रुपये या 0.15 फीसदी की गिरावट के साथ 16139 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा 155990 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 156167 रुपये और नीचे में 155050 रुपये पर पहुंचकर, 268 रुपये या 0.17 फीसदी घटकर 156064 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 158650 रुपये के भाव पर खूलकर, 159211 रुपये के दिन के उच्च और 157663 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 159571 रुपये के पिछले बंद के सामने 626 रुपये या 0.39 फीसदी की गिरावट के साथ 158945 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 259997 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 261120 रुपये और नीचे में 256424 रुपये पर पहुंचकर, 262620 रुपये के पिछले बंद के सामने 2381 रुपये या 0.91 फीसदी गिरकर 260239 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 2427 रुपये या 0.9 फीसदी गिरकर 267943 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 2493 रुपये या 0.92 फीसदी घटकर 267880 रुपये प्रति किलो

- कमोडिटी वायदाओं में 15658.22 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 62794.42 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 12597.20 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39287 पॉइंट के स्तर पर

के भाव पर ट्रेड हो रहा था। मेटल वर्ग में 1630.27 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 6.6 रुपये या 0.53 फीसदी घटकर 1243.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 40 पैसे या 0.12 फीसदी टूटकर 325.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 1.4 रुपये या 0.45 फीसदी औंधकर 311.4 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 5 पैसे या 0.03 फीसदी की नरमी के साथ 189.2 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1425.01 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5832 रुपये के भाव पर खूलकर, 5864 रुपये के दिन के उच्च और 5811 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 43 रुपये या 0.73 फीसदी की गिरावट के साथ 5827 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 39 रुपये या 0.66 फीसदी औंधकर 5830 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा 286 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 286 रुपये और नीचे में 278.1 रुपये पर पहुंचकर, 287.5 रुपये के पिछले बंद के सामने 7.1 रुपये या 2.47 फीसदी गिरकर 280.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 7 रुपये या 2.43 फीसदी की गिरावट के साथ 280.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 974.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 1.8 रुपये या 0.19 फीसदी लुढ़ककर 968.1 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7471.43 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 5125.78 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1255.36 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 174.02 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 8.93 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 191.96 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 599.80 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 811.24 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9005 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 61737 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31903 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 420881 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 53894 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8792 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19289 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 61391 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18393 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 22052 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 39105 पॉइंट पर खूलकर, 39287 के उच्च और 38994 के नीचले स्तर को छूकर, 114 पॉइंट बढ़कर 39287 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 23.6 रुपये की गिरावट के साथ 204.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.5 रुपये की गिरावट के साथ 20.15 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 678 रुपये की गिरावट के साथ 4421 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 400000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 479.5 रुपये की गिरावट के साथ 935 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 6.33 रुपये की गिरावट के साथ 11.25 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 71 पैसे की नरमी के साथ 1.5 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 23.3 रुपये की बढ़त के साथ 183.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.8 रुपये की बढ़त के साथ 19.6 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 494 रुपये की गिरावट के साथ 3830 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1101 रुपये की गिरावट के साथ 14700 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.96 रुपये की गिरावट के साथ 13.24 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 24 पैसे की नरमी

पंचायत, ग्राम गृह निर्माण और ग्राम विकास विभाग
गुजरात सरकार
सत्यमेव जयते

श्रमयोग - संगठन - समृद्धि
कमिश्नर ग्रामीण विकास कार्यालय
गुजरात राज्य

विकसित ग्राम पंचायत से
विकसित भारत की ओर

विकसित भारत - जी राम जी
125 दिन
ग्रामीण रोजगार की
नई गारंटी

बेरोज़गारी भत्ते के लिए बेहतर प्रावधान
समय पर मजदूरी का भुगतान और देरी होने पर मुआवज़ा

ग्राम सभा द्वारा विकसित
ग्राम पंचायत योजना (VGPP)

विकसित भारत - जी राम जी योजना में 125 दिन रोजगार की गारंटी ग्रामीण परिवारों के लिए आजीविका का मजबूत आधार और कठिन समय में आशा की किरण साबित होगी।

– श्री हर्ष संघवी
माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात